

भारत में हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाया जाना चाहिए-सी. कामलोवा (पद्मश्री सी. कामलोवा से आशुतोष तिवारी की बातचीत)

- आशुतोष

नाम: सी. कामलोवा

माता का नाम: किलल्यहआडी पिता का नाम: सी. ल्हुआनचेमा जन्मतिथि: 17 नवंबर 1948 ई.

जन्मस्थान: ग्राम- मामपुड़, जिला- लॉडट्लाइ, मिजोरम

शिक्षा: स्नातक, कला निष्णात (M.A.) हिंदी साहित्य, शिक्षा निष्णात (M.Ed.)

कार्य: हिंदी भाषा, साहित्य एवं शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु सक्रिय रूप से काम किया। हिंदी प्रवीण (बीए) की मान्यता हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कृतियाँ: हिंदी मिजौ शब्दकोश (2000 ई.), मिजौ

जनजातियों परिचयात्मक संक्षिप्त इतिहास (2016 ई.), सामान्य भाषा विज्ञान, सामान्य मनोविज्ञान, अनुभव का दुइ फॉट (नेपाली), मिजौ एकांकी का हिंदी में अनुवाद (क)- वीर खुवाडचेरा, लेखक- प्रो. ललटलाडलियाना खियाडते। (ख)- रानी रौपुडलियानी, लेखक प्रो. ललटलाडलियाना खियाडते, एवं अन्य रचनाएं।

पुरस्कार एवं उपलब्धियाँ:

1- अनुभव का दुइ फॉट (नेपाली) पुस्तक के लिए भारत सरकार द्वारा "भाषा भारती सम्मान" (2003- 04 ई.) से सम्मानित किया गया।

2- हिंदी मिजौ शब्दकोश पुस्तक के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने "राष्ट्र सम्मान" (2005-06 ई.) से सम्मानित किया।

3- मिजोरम के राज्यपाल एम. एम. लखेरा जी द्वारा हिंदी प्रचार के लिए "लाइफ टाइम अचीवमेंट" (2009- 10 ई.) पुरस्कार दिया गया।

4- भारत सरकार के द्वारा "पद्म श्री" (2020 ई.) से सम्मानित किया गया।

पद्मश्री से सम्मानित सी. कामलोवा जी द्वारा हिंदी प्रचार-प्रसार में किए गए कार्यों एवं उपलब्धियों पर शोधार्थी आशुतोष तिवारी की बातचीत ।

आशुतोष तिवारी - सर सादर प्रणाम।

सी. कामलोवा जी- बहुत बहुत आशीर्वाद, खूब आगे बढ़ो।

आशुतोष तिवारी- सर आपको हिंदी के प्रचार-प्रसार के महान कार्य हेतु पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किए जाने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

सी. कामलोवा जी बहुत बहुत धन्यवाद।

आशुतोष तिवारी- सर हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु आपकी जीवन- यात्रा कैसी रही और आपने कौन कौन से कार्य किए?

सी. कामलोवा जी- सबसे पहले मिजोरम की जो भौगोलिक स्थिति है, उसको समझना बहुत जरूरी है क्योंकि इसका सीधा संबंध हिंदी से है पूर्वोत्तर भारत के जितने भी राज्य हैं वहाँ पर थोड़ी बहुत हिंदी चल जाती है। दूसरी बात असम में भी लोग हिंदी चला लेते हैं। असम की भाषा असमिया, हिंदी से काफी मिलती-जुलती भाषा है इसलिए वहाँ पर लोग हिंदी समझ जाते हैं। तीसरी बात आ जाती है अरुणाचल को लेकर। अरुणाचल प्रदेश में पिछले 30 से 35 सालों में हिंदी ने बहुत तरक्की की है, वहाँ पर सैकड़ों छात्रों ने हिंदी में पीएचडी कर रखी है। वहाँ पर कोई समस्या नहीं है। इसके बाद आता है नागालैंड, नागालैंड के पास दो ऐसी जगह हैं जहाँ पर हिंदी भाषी बाहुल्य जनता रहती है। एक दीमापुर है वहाँ एक बड़ा रेलवे स्टेशन है वहाँ पर हिंदी चल जाती है दूसरा दीफू है। उनकी जो संपर्क भाषा है नागामीज और अंग्रेजी है। जो नागामीज भाषा है उसमें 50 से 60% हिंदी के शब्द मिल जाते हैं। इस प्रकार नागालैंड में भी लोग टूटी-फूटी हिंदी भाषा समझ लेते हैं। उसके बाद आता है मणिपुर, मणिपुर में वैष्णव हिंदुओं का एक बड़ा जत्था रहता है। उनके जितने पुजारी हैं मथुरा में आकर रहते हैं, इसलिए वहाँ भी लोग काफी हद तक हिंदी बोल व समझ लेते हैं। अब आता है त्रिपुरा, त्रिपुरा में बंगाली भाषा बोली जाती है और बंगाली एवं हिंदी में ज्यादा अंतर नहीं है। यह हम सब जानते हैं कि त्रिपुरा में आप घुस जाएंगे हिंदी लेकर तो आपको परेशानी नहीं होगी।

अब अंत में मिजोरम आता है, मिजोरम पूर्व की ओर म्यांमार से घिरा हुआ है और दक्षिण में बांग्लादेश है इसके अलावा कुछ मणिपुर से, कुछ असम से, कुछ त्रिपुरा से लगा हुआ है। यहाँ पर 0% लोग हिंदी बोलते हैं, क्योंकि यह ईसाई बाहुल्य क्षेत्र है। वैसे यहाँ पर सात भाषाएँ बोली जाती हैं। जिनमें बड़ी भाषा बनकर वर्तमान में उभरी है- मिजो भाषा। अन्य छः भाषा के शब्द मिजो भाषा में मिल जाएंगे। जब मिजो भाषा में यहाँ ऑफिस होता है, बाजार व चर्चों में भी यही है इसलिए यहाँ की संपर्क भाषा मिजो भाषा है। इसलिए यहाँ हिंदी नगण्य के बराबर है। मिजोरम का यह एक भौगोलिक परिचय हुआ। अब हम हिंदी लेकर चलेंगे।

17 नवंबर 1954ई. को 'असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' के सौजन्य से 'मिजो राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' का गठन किया गया था। कुछ लोगों ने कोशिश की कि हिंदी को लेकर आगे बढ़ा जाए परंतु इन लोगों ने समिति तो खड़ी कर दी लेकिन काम नहीं हो पाया। शायद दो से तीन प्रतिशत उन्होंने काम किया ऐसा मुझे लगता है। 1960ई. से 1966 ई. , फिर 1971ई. और ऐसे ही काम चलता रहा, इसी दौरान अलगाववादी तत्व उभर कर सामने आया। जिसे हम मिजो नेशनल फ्रंट (MNF) कहते हैं। इन लोगों ने

कहा कि हम भारत के नहीं हैं, हमें भारत से आजादी चाहिए। 20 वर्षों तक संघर्ष चलता रहा। इस दौरान सरकार ने 20 से 25 लोगों को हिंदी पढ़ाने के लिए रखा परंतु यह नाम मात्र के थे क्योंकि वे बच्चों को पढ़ाते नहीं थे। फिर अलगाववादियों ने कहा कि हम आजादी चाहते हैं, इसलिए आप हिंदी नहीं पढ़ाएँगे और न कोई सीखेगा। फिर 1972ई. में भारत सरकार ने मिजोरम को असम से अलग करके एक केंद्रशासित प्रदेश बना दिया। इसके बाद 'मिजो राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' का नाम बदलकर 'मिजोरम हिंदी प्रचार सभा' कर दिया गया।

इस तरह सभा ने अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित किया। इससे पहले यह असम के अधीन थे, तो यह लोग वर्धा से जुड़े थे, वर्धा का ही प्रश्न पत्र चलाते थे। पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक भी वर्धा की चलाते थे। स्वतंत्र सभा बनने के बाद इन्होंने सोचा कि सबकुछ मिजोरम से किया जाए। इन दिनों में सरकारी स्कूलों में पढ़ाता था। तो वहाँ से मेरा कोई विशेष संबंध नहीं था। 1997ई. में मिजोरम सरकार ने यह कहा कि हम मिजोरम हिंदी प्रचार सभा के अधीन आपका ट्रांसफर करेंगे। वहाँ जाकर आप कॉलेज को जिंदा करो तो इस तरह से 1997ई. में सितंबर से लेकर दिसंबर तक के बीच हमने कोशिश की यह पता लगाने की कि कॉलेज में क्या क्या कमी है। उसके बाद जो कमियाँ पता चली उनमें कुछ इस प्रकार हैं-

1. इनके पास अपनी कोई जमीन नहीं है, भवन भी नहीं है।
2. जो यहाँ हिंदी पढ़ाई जाती थी। जिसे यहाँ पर लोग बी.ए. मान कर चले थे, उसे केंद्र से मान्यता प्राप्त नहीं थी।
3. इनके पास एकेडमिक बोर्ड भी नहीं था।
4. 1954 से 1998 तक बच्चों ने व्यवहार में कभी हिंदी प्रयोग नहीं किया था। यहाँ पर जो चेयर पर्सन थे, सचिव थे उनको भी हिंदी नहीं आती थी। इनका सारा रिकॉर्ड मिजो भाषा में लिखा जाता था।
5. हिंदी सीखने वाले जो छात्र होते थे उनको मिजोरम सरकार से कोई छात्रवृत्ति नहीं मिलती थी।

इसके बाद छात्रवृत्ति के लिए मैंने बोर्ड से कई बार बैठक की और मैंने कहा कि मैं बच्चों को दिल्ली, आगरा भ्रमण कराना चाहता हूँ। बोर्ड ने कहा हमारे पास पैसे नहीं हैं और फिर कहा कि हम आपको 50000 देंगे आप 50 विद्यार्थियों को घुमा कर ले आइए। उस समय मिजोरम सरकार का एक प्रावधान था कि 10 या 15 से अधिक लोग यदि मिजोरम से बाहर जाते हैं तो उन्हें ढाई लाख रुपए की सहायता दी जाएगी। इसके बाद में 37 बच्चों को लेकर दिल्ली आ गया। सब हिंदी के बच्चे थे। इसमें मेरा अपना खर्च डेढ़ लाख हुआ। इसके बाद हमारे बच्चों को छात्रवृत्ति मिलना शुरू हो गई।

इसके बाद मैंने कॉलेज को मान्यता दिलाने के लिए 1999-2000ई. में कई बार कोशिश की तो केंद्र से एक टीम मूल्यांकन करने आई, टीम की अध्यक्ष केंद्रीय हिंदी निदेशालय की अध्यक्ष डॉक्टर पुष्पलता तनेजा थी। तीन और सदस्य थे जिनमें एक दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉक्टर वर्मा जी और सचिवालय से एक सदस्य नानक चंद्र और डॉक्टर थंगा रतन आए। इन्होंने अपनी रिपोर्ट कैबिनेट को सौंपी

और 5 महीने 17 दिन बाद मुझे दिल्ली से एक टेलीफोन आया जो टीम की अध्यक्ष डॉक्टर पुष्पलता तनेजा का था। उन्होंने मुझे बधाई दी और कहा कि आपके कॉलेज को 'कला प्रवीण' अर्थात् बीए तक की मान्यता मिल गई है। इसके बाद मुझे कहा गया कि हिंदी मिजो शब्दकोश की आवश्यकता है। 1997ई. से 2000ई. तक मैंने हिंदी- मिजो शब्दकोश (27000) शब्दों का तैयार किया जो दिल्ली में भी पब्लिश हुआ। इसके बाद मैंने क्लास 4, 6, 8, 10, प्यू इन पांच कक्षाओं के लिए मैंने 'हिंदी वार्तालाप पुस्तक माला' तैयार की। इसको तैयार करने में मुझे 6 महीने का समय लगा। इसके प्रकाशन का खर्च सभा ने उठाया। मैंने इसके बाद हिंदी व्याकरण दो भाषाओं हिंदी और मिजोरम में समानांतर रूप से बनाया। हमें मिजोरम साहित्य का अनुवाद करने के लिए सभा ने कहा। इसके बाद मैंने ललटलाडलियाना खियाडते की मिजो एकांकी का हिंदी में अनुवाद किया, जिसके नाम इस प्रकार हैं-

(क). वीर खुवाडचेरा,

लेखक- प्रो. ललटलाडलियाना खियाडते

(ख)- रानी रौपुडलियानी,

लेखक- प्रो. ललटलाड लियाना खियाडते

इसके बाद मैंने बीए के लिए हिंदी में सरल भाषा विज्ञान, सरल शिक्षा मनोविज्ञान पुस्तक लिखी। इसके बाद मिजोरम सरकार ने मुझे कहा कि आप हिंदी में मिजो जनजातियों को लेकर काम करिए। एक साल की कड़ी मेहनत के बाद मैंने 'मिजो जनजातियों का परिचयात्मक संक्षिप्त इतिहास' पुस्तक लिखी। इस पुस्तक की 8000 प्रतियाँ प्रकाशित हुई जिसे मैंने प्रत्येक राज्यपाल, लोकसभा, राज्यसभा, विश्वविद्यालयों आदि को भेजा। मैंने कई गीतों के माध्यम से मिजो जनजातियों को समझाने का प्रयास किया। इस पर मैंने एक पुस्तक "मध्यकालीन मिजो काव्य साहित्य के सात अमर गायक" लिखी।

इसके बाद मुझे देशभक्ति गीत लिखने के लिए कहा गया। 1987 के आसपास मैंने एक गीत लिखा-

हम एक थे, हम एक हैं,

जग को आज सुनाना है,

अब कोई ताकत कोई भुलावा,

हमें भटका न पाएंगे,

एकता के धागे में जुड़कर,

धुन ही धुन इठलाएंगे,

मानवता का दीप जलाकर,

गीत यही हम गाएंगे,
हम एक थे हम एक हैं।

इसके बाद हमें सभा ने एक राष्ट्रीय गीत लिखने के लिए कहा। तब मैंने गीत लिखा-

आओ मिलकर गाएँ हम,
गीत सबको सुनाएँ हम,
हैं सब इसके संतान हम,
नाम इसका भारत महान,
माता तुझे सलाम,
जग में हो तेरा नाम,
माता तुझे सलाम,
खून से सींच कर,
आँसू से भीगा,
इस तरह हमने इसे सजाया,
आओ सुनाएँ इसकी कहानी,
कुर्बान कर दे अपनी जवानी,
वंदे मातरम,
देश है हम सबका।
हिंद शिखर से सिंधु लहर तक,
मरुभूमि से खिलते चमन तक,
लिखा मैंने है नया इतिहास,
अमर ज्योति है इसकी निशानी,
देश है वीरों का आन पर मरने वालों का, उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम,

वीरों की गाथा से भरपूर।

इसके बाद मैं अपनी शिक्षा और शुरुआती जीवन को लेकर थोड़ा अपना परिचय बताता हूँ। मेरे पिताजी आर्मी में थे, वे छुट्टियों में आए मुझे और मेरी माँ को साथ लेकर नेफा (जयरामपुर) चले गए। मैंने शुरुआत की शिक्षा आर्मी स्कूल में की। इसके बाद पिताजी ने फौज छोड़ दी और वह चले आए। मैं दो साल तक वहाँ भटकता रहा और इसके बाद मैंने किशोरावस्था में ही फौज ज्वाँइन कर ली। 9 से 10 साल तक नौकरी करने के बाद पिताजी की गरीबी के कारण मैंने फौज छोड़ दी मेरे 6-7 भाई बहन भी थे। जुलाई 1973ई.

को मिजोरम सरकार ने मुझे मिडिल स्कूल के लिए शिक्षक पद पर नियुक्त किया। 1982ई. से 1984ई. तक मैंने B.Ed. किया। 1989ई. में मैंने नेहू विश्वविद्यालय से एम.ए. किया। आगरा में मैंने M.Ed. किया। मेरी शिक्षा सही तरीके से नहीं हो पाई।

एक बार मैं बचपन में 1961ई. के आसपास की बात है, मुझे अपने दादा-दादी से मिलने जाना था और मेरे पास पैसे नहीं थे। उस समय मैं बहुत छोटा था। मेरे पास पैसे न होने के कारण मैं लगातार 7 दिनों तक पैदल जंगलों से होता हुआ अपने गाँव पहुँचा। इसी प्रकार जब पिताजी आर्मी से वापस आ गए थे तब मैं स्कूल में ही था और मेरे पास स्कूल की ड्रेस के अलावा कोई ठंड के कपड़े नहीं होते थे तब मैं एक कोने में ठिठुर कर रात बिताया करता था और गर्मी में मच्छरों की बाढ़ आ जाती थी, तो मैं उनसे निपटने के लिए केरोसिन तेल को अपने शरीर पर लगाता था। जिसका असर दो-तीन घंटे तक होता था और मैं यह कार्य रात में दो-तीन बार करता था। तब उजाला होता था।

आशुतोष मैं तुम्हें एक गीत सुनाता जो मेरे बहुत करीब है। ध्यान से सुनिएगा-

बहुत खोजा जिंदगी को मेरे अजीज,

हर बदलते मौसम में मेरे हबीब,

कैसे मिलता न था इसका रंग व रूप

हर जर्रें में फैला हुआ इसका वजूद।

बसंत के दहलीज में खोजा इसे,

चमन के हर गुल से पूछा इसे,

सब ने कहा अभी तो था यहीं कहीं,

आंखों में सपने लिए यहीं कहीं,

बहुत खोजा जिंदगी को मेरे अजीज।

बरसात के बादलों में खोजा इसे,
बूंदों और बौछारों से पूछा इसे,
सबने कहा अभी तो था यहीं कहीं,
आंखों में प्यास लिए यहीं कहीं।
पतझड़ के वीराने में खोजा इसे,
सूखे पत्ते टहनियों से पूछा इसे,
सब ने कहा अभी तो था यहीं कहीं,
मायूस आंखों में अशक लिए यहीं कहीं,
बहुत खोजा जिंदगी को मेरे अजीब,
हर बदलते मौसम में मेरे हबीब,
कैसे मिलता न था इसका रंग व रूप,
हर जर्रे में फैला हुआ इसका वजूद।

अगर मेरी जिंदगी को समझना है तो इस गीत के माध्यम से समझ सकते हैं, यह गीत मेरी जिंदगी के बहुत नजदीक है।

आशुतोष तिवारी - मिजोरम के लोगों का आपके कार्यों और हिंदी के प्रचार-प्रसार को लेकर क्या प्रतिक्रिया रही?

सी. कामलोवा जी- यह आपने बहुत अच्छा सवाल किया है। मैं तीन भाषाओं को पढ़ व लिख लेता हूँ- नेपाली, मिजो और हिंदी। मैंने "अनुभव का दुड़ फॉट (नेपाली)" पुस्तक की रचना की, तो इसके लिए भारत सरकार द्वारा "भाषा-भारती सम्मान" (2003-04 ई.) से सम्मानित किया गया। तब लोगों ने कहा यह होता क्या है। इसके बाद मैंने हिंदी - मिजो शब्दकोश तैयार किया, जिसके लिए मुझे मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने राष्ट्र सम्मान से 2005-06 ई. में सम्मानित किया। इसके बाद भी लोगों ने वही कहा कि यह होता क्या है। 2009-10ई. में मिजोरम के राज्यपाल एम. एम. लखेरा जी ने राजभवन बुलाकर मुझे हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए "लाइफ टाइम अचीवमेंट" पुरस्कार से सम्मानित किया। इसके बाद भी लोगों ने कहा कि यह होता क्या है। अधिकांश लोग यह नहीं जानते कि मुझे पद्मश्री क्यों दिया गया। लेकिन अब धीरे-धीरे लोग जानने लगे हैं। 2002ई. में भारत सरकार ने एक योजना के तहत केंद्र सरकार ने मिजोरम को ढाई सौ (250) हिंदी शिक्षकों की पोस्ट दी। इस योजना के तहत आंध्र प्रदेश को 450 हिंदी शिक्षक की पोस्ट दी गई थी जिसमें से 120 पोस्ट ही वहाँ के मुख्यमंत्री ने स्वीकार किया। शेष बची सीटों

के लिए कई पूर्वी राज्य ने दावा किया परंतु मिजोरम की तरफ से मैं गया था और मैंने 200 और सीटें लेकर अर्थात् कुल मिलाकर 450 सीटें लेकर मैं वापस लौटा। अब काफी लोग सीख रहे हैं।

आशुतोष तिवारी - भारत की राजधानी दिल्ली से काफी दूर और वित्तीय सहायता के अभाव में आपको हिंदी के प्रचार और प्रसार में किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

सी. कामलोवा जी पहली सबसे बड़ी चुनौती तो यह है कि समाज साथ नहीं देता है। दूसरी यह है कि यहाँ ईसाई मिशनरी जब आए तो उनके साथ भारतीय कुली बन कर आए थे, जिससे यहाँ के लोगों में यह धारणा बनी है कि अंग्रेज आका हैं और उनकी भाषा इज्जतदार लोगों की भाषा है। जबकि उनके साथ जो काले लोग आए, वह सभी नौकर हैं और इनकी भाषा कोई मायने नहीं रखती है। यह धारणा 100 वर्षों तक चलती रही। इसलिए यहाँ कोई हिंदी नहीं सीखना चाहता था। लोगों ने हतोत्साहित करने का भी प्रयास किया। लोगों की बातें सुनकर कठिनाइयाँ पार करके मैं बाहर आया। प्रोफेसर शर्मा, प्रोफेसर संजय सिंह और प्रोफेसर अखिलेश ने हिंदी विभाग के माध्यम से काफी कार्य किया। इनके निर्देशन में 15-20 लोगों ने पीएचडी की है। करीब 14 साल तक मैं हेड रहा और मैंने 400 से 500 विद्यार्थी तैयार किए जो हिंदी पढ़ा रहे हैं।

आशुतोष तिवारी - वर्तमान भारत सरकार पूर्वी राज्यों को लेकर अधिक सजग दिखाई पड़ती है, चाहे विकास का मुद्दा या देश के अन्य भागों से कनेक्टिविटी या शिक्षा की बात हो। सरकार द्वारा किए जा रहे इन प्रयासों का क्या प्रभाव पड़ रहा है?

सी. कामलोवा जी- बहुत अच्छा सवाल किया है आपने। मैं अपनी व्यक्तिगत राय बताना चाहता हूँ कि इस समय देश को बहुत अच्छी सरकार मिली है, काम करने वाली सरकार मिली है। मैं पूर्व की सरकारों पर कोई टिप्पणी नहीं करूंगा। लेकिन कभी कभी मुझे दुख होता है कि इतना कुछ हमारी भारत सरकार हमारे समाज के लिए, मिजो समाज के लिए कर रही है, उसे मिजो समाज समझना नहीं चाहता है। क्योंकि इनकी मानसिकता कुछ राजनीतिक दलों के कारण भ्रामक बनी हुई है। इन्हें लगता है कि भाजपा सरकार हिंदुओं की सरकार है और जब यह शासन में आएगी तो लोगों को हिंदू धर्म अपनाना पड़ेगा। इस विषय पर मैं जा- जाकर के लोगों को बताता हूँ कि यह सब भ्रम है क्योंकि नागालैंड में बीजेपी के 15 विधायक हैं लेकिन ऐसा कुछ नहीं हो रहा है। हमें विकास चाहिए। लेकिन दुख होता कि लोग विरोध करते हैं, परंतु मैं यह भी कहूँगा कि लोगों को समझाना पड़ेगा, कहना पड़ेगा कि हम विकास देंगे, रोजगार देंगे। लोगों को समझाने के लिए धर्मगुरुओं से बात करनी पड़ेगी और कहना पड़ेगा कि हमें धर्म से कोई मतलब नहीं है हम आपके लिए रास्ता बनाएंगे, अस्पताल बनाएंगे, रोजगार देंगे। जमीनी स्तर पर कार्य करने की आवश्यकता है।

आशुतोष तिवारी - हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है और इसे राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता देने पर आपका क्या सुझाव है?

सी. कामलोवा जी- भारत में बहुत भाषाएँ बोली जाती हैं पर हम सब भारतीय हैं। मैं फौज के समय से ही यह मानता हूँ भारत में हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाया जाना चाहिए और इसे आज से 20 से 30 वर्ष पूर्व राष्ट्रभाषा का दर्जा मिल जाना चाहिए था परंतु सरकार की इच्छा शक्ति के अभाव में ऐसा नहीं हो पाया। सरकार को यह घोषणा करनी चाहिए कि अगले 5 वर्षों के बाद हम हिंदी को आगे बढ़ाएंगे और इसकी कठिनाइयों को दूर करना चाहिए। आज जहाँ पर भी अंग्रेजी भाषा में कार्य हो रहा है अर्थात् इतने कम लोगों के अंग्रेजी जानने के बावजूद अगर अंग्रेजी में कार्य हो सकता है तो इतने अधिक लोगों के हिंदी जानने के बावजूद उसमें कार्य क्यों नहीं हो सकता है। सरकार को इच्छाशक्ति के साथ कार्य करने की आवश्यकता है अन्यथा चाहे जितनी नीति बना लें बिना जमीनी स्तर पर पूर्ण रूप से लागू किए सफलता नहीं मिल सकती।

आशुतोष तिवारी- हिंदी प्रचार-प्रसार के लिए जो लोग इस कार्य को आगे बढ़ाएंगे या जो सरकार इस कार्य को आगे बढ़ाएगी उनके लिए आपका क्या संदेश होगा?

सी. कामलोवा जी- सबको हमारा संदेश है कि पूरे तन और मन से हिंदी की सेवा करें। पूरी ईमानदारी के साथ सेवा करें। हिंदी के प्रचार प्रसार में जो भी वित्तीय सहायता मिले उसको ईमानदारी से खर्च करें। हिंदी सभा और समिति से हमारी गुजारिश है कि वह जो भी अनुदान मिले उसका सदुपयोग करें। ईमानदारी पहली शर्त है, संघर्ष की प्रवृत्ति दूसरी शर्त है, इच्छाशक्ति को झुकने न दें। सरकार से अनुरोध है कि बिना सत्यापित किए किसी सभा, समिति को अनुदान न दें, जितनी आवश्यकता हो उतना अनुदान दें। एक बात आपको और बतानी है, 2004ई. मैं हमने स्वर्ण जयंती सभा का आयोजन किया था तो मैंने केंद्रीय हिंदी निदेशालय की अध्यक्ष डॉक्टर पुष्पलता तनेजा को आमंत्रित किया था और वह उपस्थित भी हुई थी। तो उस समय हमने एक "स्वर्ण जयंती स्मारिका पत्रिका" निकाली थी, उसमें दो-तीन लेख हिंदी में थे और सभी मिजो भाषा में थे जिसका मैंने अनुवाद किया था। इस पत्रिका का मैं मुख्य संपादक था। "भूली बिसरी यादें, गीतों के झरोखे से" नामक लेख मैंने भी लिखा था।

आशुतोष तिवारी- आपसे बात करके बहुत अच्छा लगा सर। आगे के जीवन के लिए मेरी तरफ से आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएँ और प्रणाम।

सी. कामलोवा जी- मैं चाहता हूँ, तुम बड़े आदमी बनो, पीएच.डी. कर लो, ढेर सारा आशीर्वाद। मुझे लेख का इंतजार रहेगा।

आशुतोष

पीएच.डी,

हिंदी विभाग

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली-110007